

धर्म अध्यात्म



श्राद्ध के भोजन में साक्षात् प्रकट हुए राजा दशरथ! जानिए पुष्कर से जुड़ा भगवान राम और माता सीता का यह अद्भुत प्रसंग



जानें, वनवास काल में पुष्कर में भगवान श्रीराम द्वारा किए गए राजा दशरथ के श्राद्ध का पौराणिक प्रसंग, माता सीता के झाड़ियों में छिपने का रहस्य और श्राद्ध पक्ष की मुख्य सावधानियां।

धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पितृ पक्ष में पितरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करना अत्यंत कल्याणकारी माना गया है। शास्त्रों में इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है कि स्वयं भगवान श्रीरामचंद्र जी ने भी वनवास काल के दौरान अपने पिता राजा दशरथ का श्राद्ध कर्म पूर्ण निष्ठा एवं विधि-विधान से किया था।

पुष्कर क्षेत्र में आयोजित हुआ था श्राद्ध कर्म पौराणिक कथा के अनुसार, वनवास काल के दौरान भगवान श्रीरामचंद्र जी, माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ पुष्कर में ठहरे हुए थे। उसी समय राजा दशरथ के स्वर्गवास के पश्चात् श्राद्ध की तिथियां आईं। भगवान राम ने ऋषि-मुनियों और विद्वान ब्राह्मणों को श्राद्ध के लिए आमंत्रित किया। भाई लक्ष्मण जंगल से कंदमूल एकत्र करके लाए और माता सीता ने

अत्यंत भाव से भोजन तैयार किया।

अचानक झाड़ियों के पीछे क्यों चली गई माता सीता ?

जब आमंत्रित ब्राह्मण भोजन करने बैठे, तो भगवान राम और माता सीता उन्हें भोजन परोसने लगे परंतु भोजन परोसते समय अचानक माता सीता भयभीत होकर झाड़ियों में चली गईं। इसके बाद श्रीराम जी ने लक्ष्मण जी की सहायता से ब्राह्मणों को भोजन कराया और उन्हें आदरपूर्वक विदा किया। ब्राह्मणों के जाने के पश्चात् जब माता सीता बाहर आईं, तो भगवान राम ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए उनसे इस व्यवहार का कारण पूछा।

ससुर राजा दशरथ के साक्षात् दर्शन और मर्यादा

माता सीता ने हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा कि जिन्हें श्राद्ध के लिए आमंत्रित किया गया था, उन ब्राह्मणों के स्थान पर उन्हें अपने पुज्य ससुर राजा दशरथ जी साक्षात् दिखाई दे रहे थे। माता सीता ने कहा कि अपने ससुर जी के सम्मुख वे बिना संकोच व लज्जा के कैसे आ सकती थीं, इसीलिए मर्यादा और शर्म के कारण वे झाड़ियों में छिप गई थीं।

श्राद्ध पक्ष में रखी जाने वाली मुख्य सावधानियां

शास्त्रों एवं इस कथा के संदर्भ में श्राद्ध कर्म के दौरान कुछ विशेष नियमों और सावधानियों का पालन करना आवश्यक बताया गया है: संयम एवं नियम: श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को श्राद्ध पक्ष के दौरान पान खाने, तेल मालिश करने, रस्ती प्रसंग तथा अनावश्यक संग्रह से दूर रहना चाहिए।

ब्रह्मचर्य व सत्य का पालन: श्राद्ध के दिनों में श्राद्धकर्ता और श्राद्ध ग्रहण करने आए ब्राह्मण, दोनों को ही सत्य बोलने और ब्रह्मचर्य का पालन करने का नियम रखना चाहिए।

सीमित आमंत्रण: श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को 3 से अधिक ब्राह्मणों तथा अत्यधिक रिश्तेदारों को नहीं बुलाना चाहिए।

भोक्ता हेतु नियम: श्राद्ध का भोजन ग्रहण करने वाले ब्राह्मण (भोक्त्या) को उस दिन पुनः भोजन करने और यात्रा करने से बचना चाहिए।

परिश्रम से बचाव: श्राद्ध का भोजन करने के उपरान्त अधिक शारीरिक परिश्रम और प्रतिग्रह (दान लेने) से बचना चाहिए।

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News

अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 30 सितम्बर 2026

दिन का अंक: 4 | अनुशासन, व्यवस्था, स्थिरता, व्यावहारिकता और मजबूत आधार का दिन।

मूलांक 1 | पहल को व्यावहारिक योजना में बदलें

आपका आत्मविश्वास किसी महत्वपूर्ण विषय को आगे बढ़ा सकता है, लेकिन आज गति से अधिक व्यवस्था लाभ देगी। प्राथमिकताएं तय करें, विवरण व्यवस्थित करें और फिर कदम उठाएं। अनुशासित दृष्टिकोण आपके नेतृत्व को अधिक प्रभावी बनाएगा और दोबारा काम करने की जरूरत कम करेगा।

मूलांक 2 | स्पष्ट सीमाओं से सुरक्षा बनाएं

आज आप दूसरों की जरूरतों को अधिक महसूस कर सकते हैं, लेकिन व्यावहारिक जिम्मेदारियां भी ध्यान मांगेंगी। सहयोग करें, पर स्वयं को जरूरत से ज्यादा न थकाएं। रिश्ते या साझेदारी में स्पष्ट अपेक्षाएं अधिक स्थिरता और आपसी सम्मान बना सकती हैं।

मूलांक 3 | रचनात्मक विचारों को मजबूत ढांचा दें

आपकी कल्पनाशक्ति सक्रिय है, लेकिन सर्वोत्तम परिणाम उसे व्यवस्थित करने से मिलेंगे। लेखन, शिक्षण, योजना या संवाद में चरणबद्ध तरीके से प्रगति हो सकती है। किसी नए उत्साहपूर्ण विचार पर जाने से पहले व्यावहारिक विवरण पूरे करें।

मूलांक 4 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है

आज का अंक आपके अनुशासन, विश्वसनीयता और व्यावहारिक सोच के साथ गहरा सामंजस्य बनाता है। काम, योजना, संपत्ति, धन या व्यवस्थाओं में केंद्रित ध्यान लाभ देगा। धैर्य से निर्माण करें, लेकिन इतने कठोर न बनें कि उपयोगी बदलाव नजरअंदाज हो जाए।

मूलांक 5 | अपनी प्रगति सुरक्षित रखने के लिए गति थोड़ी कम करें

आज मन विविधता या तेजी से बदलाव चाहता है, जबकि दिन की ऊर्जा पद्धति और निरंतरता पर जोर देती है। दिशा बदलने से पहले समय-सारणी, यात्रा, खर्च या प्रतिबद्धताओं की समीक्षा करें। व्यावहारिक आधार सुरक्षित होगा तो स्वतंत्रता अधिक संतोष देगी।

मूलांक 6 | व्यावहारिक देखभाल स्थायी सामंजस्य देगी

परिवार, घर और रिश्तों से जुड़े विषयों में भरोसेमंद ध्यान की जरूरत हो सकती है। आज बड़े वादों से अधिक छोटी जिम्मेदारियां निभाना महत्वपूर्ण रहेगा। अपनापन रखें, साथ ही अपने समय और संसाधनों को व्यवस्थित करें ताकि सहयोग थकान न बने।

मूलांक 7 | अंतर्दृष्टि को ठोस कार्य में बदलें

चिंतन उपयोगी है, लेकिन आज समझ को व्यावहारिक कदम में बदलना अधिक महत्वपूर्ण है। शोध, अध्ययन या योजना किसी दीर्घकालिक लक्ष्य को मजबूत कर सकती है। पूर्णता की प्रतीक्षा न करें; लगातार क्रियान्वयन केवल विचार सुधारते रहने से अधिक उपयोगी है।

मूलांक 8 | धन और काम की व्यवस्थाएं मजबूत करें

करियर और वित्तीय विषयों में व्यवस्था, जवाबदेही और दीर्घकालिक सोच लाभ देगी। बजट, जिम्मेदारियों या प्रक्रियाओं की समीक्षा करें और कमजोर हिस्सों को सुधारें। तेज विस्तार के दबाव से अधिक निरंतर प्रबंधन मजबूत परिणाम देगा।

मूलांक 9 | जिम्मेदारियां धैर्य से पूरी करें

आपकी ऊर्जा किसी कठिन काम को पूरा करने में मदद करेगी, विशेषकर जब आप जल्दबाजी से बचेंगे। बचे हुए काम व्यवस्थित करें, व्यावहारिक विवरण संभालें और प्रतिबद्धताओं को सही तरीके से पूरा करें। नियंत्रित प्रयास टकराव से बचाकर मजबूत आधार छोड़ेगा।

कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

पूर्वजों की स्मृतियों और सांस्कृतिक जड़ों का उत्सव



लेख डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

त्योहार केवल उत्सव मनाने के अवसर नहीं होते। वे अतीत और वर्तमान के बीच जीवंत पुल का काम करते हैं। वे परिवारों को जोड़ते हैं, परंपराओं को जीवित रखते हैं और हमें उन लोगों की याद दिलाते हैं, जिनके जीवन, संघर्ष और मूल्यों ने हमारे वर्तमान को आकार दिया। पूर्वजों को याद करने वाला त्योहार इसलिए केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि अपनी जड़ों की ओर लौटने की यात्रा भी है।

आधुनिक जीवन की भागदौड़ में हम अक्सर अपने पारिवारिक इतिहास से दूर होते जा रहे हैं। हमें अपने माता-पिता और दादा-दादी के बारे में तो पता होता है, लेकिन उनसे पहले की पीढ़ियों की कहानियाँ धीरे-धीरे भुला दी जाती हैं। ऐसे त्योहार हमें रुकने, याद करने और अपनी जड़ों से फिर जुड़ने का अवसर देते हैं।

उन लोगों को याद करना जो हमसे पहले आए
हर परिवार की अपनी एक कहानी होती है। हर घर, हर उपलब्धि और हर परंपरा के पीछे कई पीढ़ियों के लोगों की मेहनत, संघर्ष और योगदान छिपा होता है। हमारे पूर्वजों ने बहुत अलग परिस्थितियों में जीवन बिताया। अनेक लोगों ने आर्थिक कठिनाइयों, सीमित संसाधनों और सामाजिक चुनौतियों का सामना किया। फिर भी उन्होंने परिवार बनाए, खेती की, व्यवसाय खड़े किए, बच्चों को शिक्षित किया और परंपराओं को आगे बढ़ाया।

उन्हें याद करने का अर्थ अतीत में जीना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हम कहाँ से आए हैं और वर्तमान की नींव रखने वालों के प्रति कृतज्ञ होना।

पारिवारिक स्मृतियों का महत्व
पुरानी तस्वीरें, हस्तलिखित पत्र,

पारिवारिक कहानियाँ, पारंपरिक व्यंजन, पुश्तैनी घर और पीढ़ियों से संभालकर रखी गई वस्तुएँ केवल यादें नहीं हैं। वे हमारे सांस्कृतिक इतिहास के छोटे-छोटे दस्तावेज हैं।

जब दादा-दादी बच्चों को अपने बचपन, गाँव, स्कूल, त्योहारों या कठिन समय की कहानियाँ सुनाते हैं, तो वे ऐसा ज्ञान देते हैं जो शायद किसी पाठ्यपुस्तक में न मिले।

दुर्भाग्य से, बुजुर्गों के चले जाने के साथ ऐसी अनेक कहानियाँ भी खो जाती हैं। इसलिए पारिवारिक इतिहास लिखना, पुरानी तस्वीरों को सुरक्षित रखना और बुजुर्गों की यादों को रिकॉर्ड करना हमारी विरासत को बचाने का अच्छा तरीका हो सकता है।

संस्कृति पीढ़ियों को जोड़ती है
पारंपरिक भोजन, वेशभूषा, संगीत, लोकगीत, भाषा, रीति-रिवाज और सामुदायिक उत्सव हमारी सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण हिस्से हैं।

त्योहार बच्चों को इन परंपराओं को केवल किताबों में पढ़ने के बजाय उन्हें अनुभव करने का अवसर देते हैं। दादा-दादी द्वारा सुनाया गया लोकगीत, परिवार के साथ बनाया गया पारंपरिक भोजन या किसी पुरानी परंपरा के पीछे की कहानी बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ सकती है।

हालाँकि परंपराएँ समय के साथ बदलती भी हैं। संस्कृति को बचाने का अर्थ आधुनिकता को अस्वीकार करना नहीं है। एक स्वस्थ समाज अपनी विरासत का सम्मान करते हुए नए विचारों और सकारात्मक बदलावों के लिए भी खुला रह सकता है।

स्मृति से जिम्मेदारी तक
पूर्वजों को याद करना हमें आने वाली पीढ़ियों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के



बारे में भी सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है।

हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसा पर्यावरण छोड़ेंगे? कौन-से मूल्य उन्हें देंगे? क्या वे हमें केवल हमारी संपत्ति और उपभोग के लिए याद करेंगे या हमारे योगदान के लिए भी?

हमारे पूर्वजों ने हमें केवल जमीन, घर या संपत्ति नहीं दी। उन्होंने हमें भाषा, मूल्य, ज्ञान, रिश्ते और सांस्कृतिक परंपराएँ भी दीं। हमारी जिम्मेदारी है कि जो अच्छा है उसे सुरक्षित रखें और जिसमें सुधार की आवश्यकता है, उसे बेहतर बनाएं।

उद्देश्यपूर्ण उत्सव
पूर्वजों की स्मृतियों पर केंद्रित त्योहार

में कुछ सरल लेकिन अर्थपूर्ण गतिविधियाँ की जा सकती हैं—परिवार का इतिहास साझा करना, पुरानी तस्वीरों की प्रदर्शनी लगाना, दादा-दादी की यादों को रिकॉर्ड करना, पारंपरिक भोजन बनाना, बच्चों को लोकगीत सिखाना, पुश्तैनी स्थानों की यात्रा करना या प्रियजनों की स्मृति में पेड़ लगाना।

ऐसी गतिविधियाँ त्योहार को केवल मनोरंजन का दिन न बनाकर सीखने, जुड़ने और स्मरण करने का अवसर बना देती हैं।

विशेष रूप से युवा पीढ़ी इससे लाभान्वित हो सकती है। अपने परिवार का इतिहास जानना उनमें अपनापन, कृतज्ञता और पिछली पीढ़ियों के संघर्षों

के प्रति सम्मान की भावना पैदा कर सकता है।

जड़ें भविष्य को अर्थ देती हैं
जिस पेड़ की जड़ें मजबूत होती हैं, वह बदलते मौसम के बीच भी आकाश की ओर बढ़ता रहता है। मनुष्य भी ऐसा ही कर सकता है। हम आधुनिक शिक्षा, तकनीक और नई जीवनशैली को अपनाते हुए भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पूरी तरह नहीं भूलें। पूर्वजों को याद करना हमें विनम्रता सिखाता है। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि प्रगति शायद ही कभी केवल एक पीढ़ी का परिणाम होती है। हम पिछली पीढ़ियों से अवसर प्राप्त करते हैं और हमारी जिम्मेदारी है कि आने वाली

पीढ़ियों के लिए भी बेहतर अवसर तैयार करें।

इसलिए पूर्वजों की स्मृतियों का उत्सव केवल पीछे मुड़कर देखने का अवसर नहीं है। यह अतीत को समझने, वर्तमान की कद्र करने और भविष्य के लिए जिम्मेदारी से आगे बढ़ने का अवसर है।

हमारे पूर्वज आज हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन उनकी कहानियाँ, मूल्य और त्याग आज भी हमारे जीवन में जीवित हैं। जब कोई त्योहार हमें उन्हें याद करने का अवसर देता है, तो वह केवल उत्सव नहीं रहता—वह हमारी पहचान, हमारी जड़ों और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी का उत्सव बन जाता है।

सेवा मेरा योगदान के तहत जिलाभर में सुगमता से चल रहा स्वच्छता अभियान

ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों और शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों व नागरिकों ने किया श्रमदान, स्वच्छता का दिया संदेश

झज्जर स्थित पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सहित विभिन्न शिक्षण संस्थानों में आयोजित हुई स्वच्छता जागरूकता गतिविधियां

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 29 सितंबर। जिला झज्जर में 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत ‘सेवा मेरा योगदान’ मॉड्यूल के अंतर्गत मंगलवार को भी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षण संस्थानों में स्वच्छता अभियान चलाया गया। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में आयोजित अभियान में ग्रामीणों, विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों ने बड़-चढ़कर भाग लेते हुए श्रमदान किया और स्वच्छता का संदेश दिया। झज्जर पीएम श्री स्कूल में छात्राओं ने शपथ लेकर दिया स्वच्छता का

संदेश

झज्जर स्थित पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में छात्राओं को स्वच्छता के प्रति जागरूकता की शपथ दिलाई गई। इसके अलावा जिलाभर के शिक्षण संस्थानों में भी स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने परिसर की साफ-सफाई कर कचरा एकत्र किया और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का संदेश दिया। इस दौरान विद्यार्थियों को स्वच्छता को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने तथा अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया गया। विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक करते हुए अपने घर, शिक्षण संस्थान और आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ रखने तथा कचरा निर्धारित स्थान पर डालने के लिए प्रेरित किया गया।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में हुई स्वच्छता गतिविधियां

मंगलवार को शहरी क्षेत्रों में डीएमसी जगनवास के निर्देशानुसार

झज्जर, बहादुरगढ़ और बेरी के विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं। सफाई टीमों ने चिन्हित स्थानों एवं कचरा संवेदनशील क्षेत्रों की साफ-सफाई कर कचरे का उठान किया। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट के मार्गदर्शन में विभिन्न गांवों में स्वच्छता अभियान चलाया गया। ग्रामीणों ने सार्वजनिक स्थानों, गलियों और आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई में सहयोग करते हुए स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई।

सेवा और जनभागीदारी की भावना को मिल रहा बढ़ावा

‘सेवा मेरा योगदान’ मॉड्यूल के तहत आयोजित स्वच्छता गतिविधियों का उद्देश्य नागरिकों और विद्यार्थियों में स्वच्छता, सेवा एवं सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करना है। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों में जनभागीदारी सुनिश्चित करते हुए लोगों को समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

गांव कलोई में इंडोर जिम ने बदली फिटनेस की तस्वीर

–गांव में ही आधुनिक व्यायाम सुविधा मिलने से युवाओं को मिला स्वस्थ जीवनशैली का अवसर

–‘सेवा संकल्प अभियान’ के ‘सेवा की कहानी’ मॉड्यूल में सामने आई ग्रामीण विकास की सकारात्मक पहल

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 29 सितंबर किसी गांव के विकास की कहानी केवल सड़कों, गलियों और भवनों तक सीमित नहीं होती, बल्कि तब पूरी होती है जब वहां रहने वाले लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव दिखाई देने

लगे। झज्जर खंड के गांव कलोई में स्थापित इंडोर जिम इसी बदलाव की एक ऐसी कहानी है, जहां आधुनिक व्यायाम सुविधा ने ग्रामीण युवाओं और आमजन को स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन शैली की ओर बढ़ने का अवसर दिया है।

शहर जाने की जरूरत हुई कम

इंडोर जिम की सुविधा उपलब्ध होने से पहले गांव के युवाओं और अन्य ग्रामीणों को व्यायाम एवं फिटनेस के लिए झज्जर शहर की निजी जिमों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त समय और धन खर्च करना पड़ता था। कई लोगों के लिए यह

रोजाना संभव नहीं हो पाता था। अब गांव में ही आधुनिक व्यायाम सुविधा उपलब्ध होने से ग्रामीणों के लिए फिटनेस उनकी पहुंच में आ गई है। अपने घर के नजदीक सुविधा मिलने से नियमित व्यायाम करना पहले की अपेक्षा आसान हुआ है।

युवाओं की दिनचर्या में शामिल हुआ व्यायाम

कलोई का इंडोर जिम विशेष रूप से युवाओं को आकर्षित कर रहा है। युवा अपनी दैनिक दिनचर्या में व्यायाम को शामिल कर शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय

बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इससे उनमें फिटनेस के प्रति जागरूकता के साथ-साथ अनुशासन और नियमितता की भावना भी मजबूत हो रही है। यह सुविधा युवाओं को खाली समय का सकारात्मक उपयोग करने और स्वस्थ गतिविधियों से जुड़ने का अवसर दे रही है। नियमित व्यायाम के माध्यम से उनमें आत्मविश्वास और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति सोच को भी बढ़ावा मिल रहा है।

महिलाओं और आमजन के लिए भी उपयोगी

इंडोर जिम का लाभ केवल युवाओं तक

सीमित नहीं है। गांव की महिलाएं और अन्य आयु वर्ग के ग्रामीण भी अपनी सुविधा के अनुसार व्यायाम की ओर बढ़ रहे हैं। गांव में ही सुविधा उपलब्ध होने से स्वास्थ्य और फिटनेस को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का अवसर मिला है।

एक सुविधा, अनेक सकारात्मक बदलाव

कलोई में इंडोर जिम की स्थापना को केवल व्यायाम उपकरणों की उपलब्धता के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्वस्थ सोच और सकारात्मक वातावरण तैयार करने की दिशा में एक

कदम है। इससे युवाओं को अपने गांव में ही बेहतर सुविधा और स्वस्थ गतिविधि का विकल्प मिला है।

ग्रामीणों के लिए ऐसी सुविधाएं यह संदेश भी देती हैं कि स्वस्थ शरीर और सक्रिय जीवनशैली केवल शहरों तक सीमित नहीं है। गांव में रहने वाले लोगों को भी आधुनिक सुविधाओं का लाभ मिलना ग्रामीण विकास की व्यापक सोच को दर्शाता है।

‘स्वस्थ नागरिक से स्वस्थ गांव’ की ओर कदम

‘सेवा संकल्प अभियान’ के ‘सेवा की

कहानी’ मॉड्यूल के तहत कलोई का इंडोर जिम ग्रामीण विकास के साथ मानव संसाधन विकास की भी कहानी कह रहा है। गांव में उपलब्ध यह सुविधा युवाओं को स्वस्थ, सक्रिय और सकारात्मक जीवन की ओर प्रेरित कर रही है।

कलोई में शुरू हुई यह पहल ‘स्वस्थ नागरिक, स्वस्थ गांव और स्वस्थ हरियाणा’ की सोच को मजबूत करने की दिशा में एक सार्थक कदम है। गांव के लोगों के लिए यह सुविधा विकास के साथ-साथ उनके जीवन में स्वस्थ बदलाव की एक नई शुरुआत भी बन रही है।

युवाओं के नवाचार से विकसित भारत के संकल्प को मिलेगी नई गति : दिनेश सिंह शेखावत

–सेवा संकल्प अभियान के तहत राजकीय महाविद्यालय बहू में ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ का आयोजन

– विद्यार्थियों को नवाचार, स्टार्टअप और उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए किया प्रेरित – समाज की वास्तविक समस्याओं के समाधान पर आधारित नवाचारों को मिलेगा प्रोत्साहन

झज्जर, 29 सितंबर। सेवा संकल्प अभियान के तहत राजकीय महाविद्यालय बहू में ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दिनेश सिंह शेखावत ने मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में विद्यार्थियों से संवाद किया और उन्हें नवाचार तथा उद्यमिता के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

दिनेश सिंह शेखावत ने कहा कि युवाओं में प्रतिभा और नए विचारों की कोई कमी नहीं है। आवश्यकता है कि इन विचारों को समाज की वास्तविक जरूरतों से जोड़ते हुए उपयोगी समाधान के रूप में विकसित किया जाए। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों ने युवाओं के लिए नवाचार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक अवसर उपलब्ध करवाए हैं। उन्होंने कहा कि ‘सेवा फर्स्ट

इनोवेशन चैलेंज’ विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक सोच को मंच देने का अवसर प्रदान कर रहा है। स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, जल संरक्षण, पर्यावरण, महिला सुरक्षा, डिजिटल सेवाओं और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में युवा ऐसे समाधान विकसित कर सकते हैं, जिनका सीधा लाभ समाज को मिल सके।

पुरस्कार से अधिक महत्वपूर्ण समाज की समस्या का समाधान

मुख्य वक्ता ने कहा कि किसी नवाचार का वास्तविक सफलता केवल पुरस्कार हासिल करना नहीं, बल्कि किसी समस्या का व्यावहारिक और प्रभावी समाधान तैयार करना है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी प्रतिभा, तकनीकी ज्ञान और रचनात्मक सोच का उपयोग जनहित में करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में जिला उद्योग केंद्र, बहादुरगढ़ के औद्योगिक विस्तार अधिकारी मोहन कुमार ने विद्यार्थियों को स्टार्टअप, उद्यमिता तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं और सॉफ्टवेयर के बारे में जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को स्वरोजगार एवं उद्यम स्थापित करने के लिए उपलब्ध अवसरों से भी अवगत करवाया।

डिजिटल माध्यम से प्रस्तुत किए जा सकेंगे नवाचार

कार्यक्रम में बताया गया कि

प्रतियोगिता के तहत विद्यार्थी अपने प्रोजेक्ट, मॉडल, शोध, वीडियो और तकनीकी समाधान डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। जिला स्तर पर चयनित श्रेष्ठ नवाचारों को प्रोत्साहन राशि तथा राज्य स्तर पर चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जितेंद्र भारद्वाज ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार की भावना विकसित करने में सहायक हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपने नए विचारों को समाजोपयोगी समाधान में बदलने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में दिनेश गोयल, झज्जर विधानसभा सह संयोजक दीपक झांसवा, धीरज कौशिक, औद्योगिक विस्तार अधिकारी मोहन कुमार, नोडल अधिकारी नरेंद्र कुमार, सुनील कुमार, मोहन सिंह सहित महाविद्यालय के प्राध्यापकगण एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के समापन पर दिनेश सिंह शेखावत ने महाविद्यालय प्रशासन, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति, नवाचार और सेवा भावना का समन्वय ही विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सेवा मेरा योगदान थीम पर गांव खेड़ी जट्ट, साल्हावास में आयोजित हुए स्वास्थ्य एवं योग कार्यक्रम

सेवा संकल्प अभियान के तहत 394 लोगों ने लिया स्वास्थ्य शिविरों का लाभ, 231 ने किया योग अभ्यास

झज्जर, 29 सितंबर

सेवा संकल्प अभियान के तहत डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जनकल्याणकारी गतिविधियों का आयोजन लगातार जारी है। अभियान के अंतर्गत ‘सेवा मेरा योगदान’ थीम के तहत आयुष विभाग द्वारा खेड़ी जट्ट, साल्हावास तथा गांव दुजाना गांवों में स्वास्थ्य जांच एवं योग जागरूकता संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया गया।

खेड़ी जट्ट और साल्हावास में आयोजित हुए मेगा कैंप

जिला आयुष अधिकारी डॉ. सुमन ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के

तहत खेड़ी जट्ट में आयोजित मेगा कैंप में 142 लोगों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया, जबकि 120 लोगों ने योग गतिविधि में भाग लिया। इसी प्रकार साल्हावास में आयोजित मेगा कैंप में 191 लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जांच एवं

परामर्श किया गया तथा 76 लोगों ने योग अभ्यास में भाग लिया। उन्होंने बताया कि इन शिविरों के माध्यम से आमजन को आयुष चिकित्सा पद्धति, स्वस्थ जीवनशैली और नियमित योग के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। आयुष

विभाग की टीमों द्वारा लोगों को उनकी स्वास्थ्य आवश्यकताओं के अनुसार उचित परामर्श भी दिया गया। उन्होंने बताया कि तीनों कार्यक्रमों में कुल 394 लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं एवं परामर्श उपलब्ध करवाया गया, जबकि

खरीद प्रक्रिया को सुविधाजनक व पारदर्शी बनाने के लिए प्रशासन सजग:डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने बेरी और मातनहेल अनाज मंडियों का दौरा कर बाजरा व धान खरीद व्यवस्थाओं का लिया जायजा

किसानों को मंडी के अंदर प्रवेश और गेट पास जारी करने में अनावश्यक देरी न हो, अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

झज्जर, 29 सितंबर। डीसी वर्षा खांगवाल ने मंगलवार को बेरी और मातनहेल अनाज मंडियों का दौरा कर बाजरा व धान खरीद व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मंडी में बाजरा की आवक, खरीद प्रक्रिया, गुणवत्ता जांच, फसल के उठान तथा किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं का मौके पर निरीक्षण किया। इस बीच उन्होंने एसडीएम झज्जर रवि मीणा और एसडीएम बेरी रेणुका नौदल से खरीद व्यवस्थाओं को लेकर फीडबैक लिया। उन्होंने कहा खरीद प्रक्रिया को पारदर्शी और सुविधाजनक बनाने के लिए प्रशासन सजगता से कार्य कर रहा है।

डीसी ने किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंडी के अंदर किसानों की फसल के प्रबंधन तथा गेट पास जारी करने की व्यवस्था को लेकर अधिकारियों को विशेष निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसानों को मंडी में प्रवेश करने और गेट पास बनवाने में किसी प्रकार की अनावश्यक परेशानी या देरी नहीं होनी चाहिए। निर्धारित प्रक्रिया के तहत किसानों को समय पर गेट पास जारी किए

जाएं, ताकि वे अपनी फसल सुगमता से मंडी में ला सकें।

निर्धारित नियमों के अनुसार सुनिश्चित हो बाजरा व धान उपज की खरीद

डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंडी में बाजरा खरीद प्रक्रिया सुचारू, पारदर्शी एवं निर्धारित नियमों के अनुसार सुनिश्चित की जाए। किसानों को अपनी फसल सहायता केंद्र, अटल कैंटीन तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

किसानों की सुविधा प्रशासन की प्राथमिकता : डीसी

खरीद के दौरान किसानों की सुविधा प्रशासन की प्राथमिकता है। किसानों की समस्याओं का मौके पर ही प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीद प्रक्रिया की लगातार निगरानी रखें और संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए किसानों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाएं। इस दौरान उन्होंने आढ़तियों की समस्याएं सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को अविलंब समाधान के निर्देश दिए।

बाजरा खरीद के लिए 8 और धान के लिए 5 खरीद केंद्र निर्धारित

डीएमएससी आदित्य कौशिक ने बताया कि जिला भर में किसानों की सुविधा के मद्देनजर

231 लोगों ने योग गतिविधियों में भाग लेकर स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दिया।

आमजन को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए किया प्रेरित

जिला उद्योग समन्वयक डॉ. पवन देशवाल ने बताया कि ‘सेवा मेरा योगदान’ थीम का उद्देश्य जनभागीदारी के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वास्थ्य एवं जनकल्याण की सेवाओं को पहुंचाना है। आयुष विभाग द्वारा लोगों को नियमित योग एवं व्यायाम करने, संतुलित आहार लेने, उचित दिनचर्या अपनाने तथा स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे सकारात्मक बदलाव करके स्वयं के साथ-साथ समाज के स्वास्थ्य में भी अपना योगदान दे सकता है। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से आयुष विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता और योग को जन-जन तक पहुंचाने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक करें अधिकारी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने जिलाभर में पराली प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण उपायों को लेकर दिए सख्त निर्देश

झज्जर, 29 सितंबर। जिला में पराली प्रबंधन को बढ़ावा देने और पराली जलाने की घटनाओं पर प्रभावी रोक लगाने और वायु गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन प्रतिबद्ध है। यह जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल ने मंगलवार को दी।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदूषण नियंत्रण उपायों की कड़ाई से पालना सुनिश्चित करते हुए फील्ड में नियमित निगरानी की जाए। उन्होंने पराली जलाने की संभावित घटनाओं की तत्काल सूचना और

प्रभावी कार्रवाई के लिए विक्क रेस्पॉन्स टीमों से सक्रिय रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषित होने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी प्रभावित होती है। इसलिए किसानों को निरंतर जागरूक करते हुए पराली न जलाने तथा फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक एवं वैकल्पिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए।

फील्ड विजिट के साथ संभावित स्रोतों पर रखें नजर

डीसी ने संबंधित अधिकारियों को नियमित फील्ड विजिट करने और पराली जलाने की आशंका वाले क्षेत्रों में पहले से प्रभावी कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रदूषण फैलाने वाले संभावित स्रोतों की निगरानी के

लिए आवश्यकता अनुसार ड्रोन का उपयोग करने तथा संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने को कहा। उन्होंने भुवन एप और सीआरएम योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर भी जोर दिया।

प्रति एकड़ 1200 रुपये की प्रोत्साहन राशि

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि कृषि विभाग द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के तहत पराली को खेत में मिलाने पर किसानों को प्रति एकड़ 1200 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस योजना सहित फसल अवशेष प्रबंधन की उपलब्ध तकनीकों की जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाई जाए।

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

मानवाधिकार की दिशा में देहरादून पुलिस का सराहनीय कदम - संवेदीकरण कार्यशाला

NHRC की वार्षिक रिपोर्ट 2024-25 को धरातल पर उतारेगी उत्तराखंड पुलिस, हाशिए के समाज को केंद्र में रखकर होगी पुलिसिंग की नई पहल

लेख:- पिंकी कुंडू- सह संपादक परिवहन विशेष, देहरादून

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC), नई दिल्ली की वार्षिक रिपोर्ट 2024-2025 की संस्तुतियों को जमीन पर उतारने के लिए जनपद देहरादून पुलिस एक मिसाल पेश करने जा रही है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, देहरादून के निर्देश पर 30 सितम्बर 2026 को सुबह 11:00 बजे, पुलिस लाइन स्थित सभागार में एक दिवसीय संवेदीकरण एवं क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यशाला महज औपचारिकता नहीं, बल्कि पुलिसिंग में मानवीय दृष्टिकोण को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

तथ्य और मुख्य बिंदु:

परिवहन विशेष - राष्ट्रीय दैनिक • विश्वसनीय • निष्पक्ष

SPECIAL REPORT

Date: 29 September 2026 • मंगलवार

मानवाधिकार की दिशा में देहरादून पुलिस का सराहनीय कदम

NHRC रिपोर्ट 2024-25 को धरातल पर उतारेगी उत्तराखंड पुलिस, 30 सितंबर को विशेष कार्यशाला



1) उद्देश्य: पुलिस कार्यप्रणाली में सुधार, Procedural Justice में सहनश्रुति

2) फोकस: Human Rights Defenders, NGOs, Sex Workers ke bachhe, Marginalized communities

3) मार्गदर्शक: Nainital High Court retired Justice Rajesh Tandon

4) आयोजन: Nodal Manavadhikar Prakoshit, SP Gramin Riskikesh, Venue: Sabhagar Police Line Dehradun Time: 30/09/2026 11 AM

रिपोर्ट: विशेष संवाददाता परिवहन विशेष देहरादून • संपादक: रंजय कुमार बाला

तारीख: 29 सितंबर 2026 मंगलवार • जनहित में जारी

मानवाधिकार • न्याय • समता • समान



NATIONAL HUMAN RIGHTS COMMISSION

एक दिवसीय संवेदिकरण एवं क्षमता निर्माण प्रशिक्षण

One Day Sensitization and Capacity Building Workshop

Based on NHRC Annual Report 2024-2025

ORGANIZED BY: Office of Senior Superintendent of Police, Dehradun

Date: 30/09/2026 Time: 11:00 AM

Venue: Sabhagar, Police Line, Dehradun

TOPICS: Human Rights Defenders, NGO, Sex Workers Children, Marginalized Communities Rights

CHIEF GUEST: Hon'ble Justice Rajesh Tandon (Retd.) High Court Nainital

For Participation & Queries | Contact: Office of SSP, Dehradun | Email: spsdehradun-uttarakhand@gov.in

This workshop is in line with NHRC directives for human rights sensitization and capacity building for vulnerable communities

आमंत्रित किया गया है। न्यायपालिका के अनुभवी दृष्टिकोण से पुलिसकर्मियों को कानून और संवेदनशीलता के बीच संतुलन साधने की सीख मिलेगी।

आयोजनकर्ता कौन? इस

हाशिए के समाज को केंद्र में रखकर कार्यशाला करना, उत्तराखंड पुलिस की प्रगतिशील सोच को दर्शाता है। उम्मीद है कि इस कार्यशाला से निकले निष्कर्ष थानों की कार्यशैली में सकारात्मक बदलाव लाएंगे।

कार्यशाला विवरण:

दिनांक - 30/09/2026 | समय - सुबह 11:00 बजे | स्थान - सभागार, पुलिस लाइन, जनपद देहरादून

साल में दो बार हों जेईई, नीट और सीयूईटी जैसी प्रवेश परीक्षाएं

लेख डॉ. विजय गर्ग, परिवहन विशेष समाचार पत्र

भारत में उच्च शिक्षा में प्रवेश की प्रक्रिया लाखों विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़ी हुई है। जेईई, नीट और सीयूईटी जैसी परीक्षाएं केवल ज्ञान और तैयारी की परीक्षा नहीं होतीं, बल्कि कई बार विद्यार्थियों के लिए जीवन की दिशा तय करने वाली महत्वपूर्ण सीढ़ी बन जाती हैं। ऐसे में यह सवाल लगातार महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि क्या इतनी बड़ी और महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन वर्ष में केवल एक बार होना चाहिए, या विद्यार्थियों को वर्ष में दो बार परीक्षा देने का अवसर मिलना चाहिए?

एक परीक्षा, एक दिन और कुछ घंटों का प्रदर्शन किसी विद्यार्थी की पूरी क्षमता को हमेशा व्यक्त नहीं कर सकता। परीक्षा के दिन स्वास्थ्य संबंधी समस्या, मानसिक दबाव, तकनीकी कठिनाई, पारिवारिक परिस्थिति या किसी अप्रत्याशित घटना का प्रभाव भी परिणाम पर पड़ सकता है। इसलिए वर्ष में दो अवसर उपलब्ध कराने की अवधारणा पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है।

एक परीक्षा से तय न हो भविष्य

भारत में प्रतियोगी परीक्षाओं में लाखों विद्यार्थी शामिल होते हैं। इनमें से अनेक विद्यार्थी छोटे शहरों, ग्रामीण क्षेत्रों और सीमित संसाधनों वाले परिवारों से आते हैं। वे वर्षों तक मेहनत करते हैं और एक निश्चित परीक्षा की तैयारी में अपना समय, ऊर्जा और आर्थिक संसाधन लगाते हैं।



सीयूईटी के माध्यम से विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया को एक साझा मंच उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या और विविधता को देखते हुए प्रवेश प्रक्रिया में लचीलापन महत्वपूर्ण है। वर्ष में दो अवसर होने पर विद्यार्थी अपनी तैयारी और शैक्षणिक परिस्थितियों के अनुसार बेहतर समय का चयन कर सकते हैं। इससे उन विद्यार्थियों को भी मदद मिल सकती है जो बोर्ड परीक्षा, अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं या व्यक्तिगत परिस्थितियों के कारण एक निश्चित परीक्षा-समय में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाते।

हालांकि इसके लिए विश्वविद्यालयों के अकादमिक कैलेंडर, परिणाम, काउंसिलिंग और प्रवेश प्रक्रिया के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक होगा।

परीक्षा का तनाव कम हो सकता है

प्रतियोगी परीक्षा का मानसिक दबाव विद्यार्थियों के लिए गंभीर विषय है। जब विद्यार्थी को पता होता है कि उसके पास केवल एक अवसर है, तो परीक्षा का तनाव कई गुना बढ़ सकता है। दो अवसर होने पर परीक्षा को लेकर

असफलता का डर कुछ हद तक कम हो सकता है। विद्यार्थी पहली परीक्षा को अपने प्रदर्शन को समझने और अपनी कमजोरियों की पहचान करने के अवसर के रूप में देख सकते हैं तथा दूसरे प्रयास में सुधार कर सकते हैं। लेकिन यहां एक सावधानी भी जरूरी है। यदि दो परीक्षाओं के कारण विद्यार्थियों को पूरे वर्ष लगातार तैयारी और परीक्षा के दबाव में रहना पड़े, तो सुधार का उद्देश्य उल्टा भी पड़ सकता है। इसलिए दो अवसरों की व्यवस्था को "दो बार अधिक दबाव" नहीं, बल्कि "दो बार अवसर" के रूप में डिजाइन करना होगा।

कोचिंग संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वर्ष में दो बार परीक्षाएं होने से कोचिंग उद्योग पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यदि व्यवस्था सही तरीके से तैयार नहीं की गई, तो विद्यार्थी दोनों परीक्षाओं के लिए अलग-अलग महंगे कोर्स और टेस्ट सीरीज लेने के दबाव में आ सकते हैं। भूखलन प्रभावित क्षेत्र में पुनर्स्थापना कार्य तेजी से चल रहा है। दिन-रात लगातार काम जारी रखा जा रहा है और रात के समय भी कार्य किया जा रहा है। इसके लिए अतिरिक्त मानव संसाधन, भारी मशीनरी और अन्य आवश्यक संसाधन लगाए गए हैं। सभी पुनर्स्थापना कार्यों में सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है।

कठिनाई न हो, इसके लिए परीक्षा केंद्रों का संतुलित वितरण महत्वपूर्ण है। तकनीकी परीक्षा में किसी विद्यार्थी को सर्वर, बिजली, कंप्यूटर या नेटवर्क की समस्या के कारण नुकसान नहीं होना चाहिए। इसके लिए मजबूत बैकअप व्यवस्था और स्पष्ट शिकायत निवारण प्रणाली आवश्यक होगी। विद्यार्थियों को केवल अधिक प्रयास नहीं, बेहतर अवसर चाहिए। यह समझना जरूरी है कि परीक्षा में दो अवसर उपलब्ध कराना अपने आप में शिक्षा व्यवस्था का सुधार नहीं है। यदि विद्यार्थी के पास बेहतर विद्यालय, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, इंटरनेट और आर्थिक संसाधनों की समान पहुंच नहीं है, तो केवल परीक्षा के अवसर बढ़ाने से असमानता समाप्त नहीं होगी। वास्तविक सुधार तब होगा जब परीक्षा प्रणाली के साथ तैयारी के अवसर भी अधिक समान बनाए जाएं।

बोर्ड परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं में समन्वय

कक्षा 12 के विद्यार्थी अक्सर बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। यदि जेईई, नीट और सीयूईटी जैसी परीक्षाओं की तारीखें एक-दूसरे के बहुत करीब हों, तो विद्यार्थियों पर अनावश्यक दबाव बढ़ सकता है। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर एक समन्वित परीक्षा कैलेंडर की आवश्यकता हो सकती है। बोर्ड परीक्षा, प्रवेश परीक्षा, परिणाम और काउंसिलिंग के बीच पर्याप्त अंतर रखा जाए तो विद्यार्थियों को बेहतर योजना बनाने का अवसर मिलेगा।

क्या दो बार परीक्षा से सफलता सुनिश्चित होगी ?

बिल्कुल नहीं। दो अवसर मिलने का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी बेहतर परिणाम प्राप्त करेगा। सफलता अब भी तैयारी, समझ, अभ्यास, समय-प्रबंधन और प्रतिस्पर्धा जैसे अनेक कारकों पर निर्भर करेगी।

दो बार परीक्षा का उद्देश्य सफलता की गारंटी देना नहीं, बल्कि एक खराब दिन के प्रभाव को कम करना और विद्यार्थियों को दूसरा अवसर उपलब्ध कराना होना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से सीख

दुनिया के विभिन्न देशों में उच्च शिक्षा प्रवेश के लिए अलग-अलग परीक्षा प्रणालियां हैं। कुछ जगह मानकीकृत परीक्षाओं के अनेक अवसर मिलते हैं, जबकि कुछ व्यवस्थाओं में विद्यालयी प्रदर्शन, विषयगत परीक्षाओं और अन्य शैक्षणिक मानकों को भी महत्व दिया जाता

मालिगुड़ा स्टेशन पर पुनर्स्थापना कार्य में तेजी, पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक ने लिया जायजा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : पूर्व तट रेलवे के रायगढ़ा रेल मंडल क्षेत्र में लगातार भारी बारिश के कारण जलभराव स्थानों पर भूखलन, मिट्टी धंसने और जलभराव की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसके मद्देनजर प्रभावित रेल सेक्शनों में पुनर्स्थापना और सुरक्षा कार्य युद्धस्तर पर तेज कर दिए गए हैं। पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक परमेश्वर फुंकवाल ने 28 सितंबर को कोरापुट-जयपुर रेल सेक्शन के प्रमुख प्रभावित स्थलों में से एक मालिगुड़ा में चल रहे पुनर्स्थापना कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया और रेलवे ट्रैक की बहासनीक रूप से संबंधित कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान प्रमुख विभागीय अधिकारियों, जिनमें प्रमुख मुख्य अभियंता

तथा प्रमुख मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे, ने महाप्रबंधक को चल रहे पुनर्स्थापना कार्यों और अपनाए जा रहे सुरक्षा उपायों की जानकारी दी। रायगढ़ा रेल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (DRM) सहित वरिष्ठ मंडल अधिकारियों ने भी महाप्रबंधक को प्रभावित स्थान की स्थिति, पुनर्स्थापना कार्य की प्रगति तथा रेल परिचालन को जल्द से जल्द सामान्य करने के लिए उठाए जा रहे कदमों से अवगत कराया। कोरापुट-रायगढ़ा और कोरापुट-जयपुर सेक्शन के विभिन्न स्थानों पर लगातार और अत्यधिक भारी बारिश के कारण भूखलन, मिट्टी धंसने तथा जलभराव की स्थिति उत्पन्न हुई है। मालिगुड़ा यार्ड को छोड़कर अन्य सभी प्रभावित स्थानों

मालिगुड़ा में पुनर्स्थापना कार्य के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों के अलावा 600 से अधिक श्रमिकों को लगाया गया है। प्रभावित रेलवे ट्रैक से मिट्टी और मलबा हटाने तथा रेलवे बुनियादी ढांचे को जल्द से जल्द बहाल करने के लिए भारी मशीनरी, विभिन्न उपकरणों और विभागीय टीमों को लगातार तैनात किया गया है। पुनर्स्थापना कार्य में लगे कर्मचारियों की सुविधा के लिए कार्यस्थल पर पर्याप्त रोशनी, अस्थायी आश्रय, मोबाइल शौचालय, पेयजल, भोजन और प्राथमिक चिकित्सा सहित चिकित्सा सहायता की व्यवस्था की गई है। लंबे समय से पुनर्स्थापना कार्य जारी रहने और प्रभावित स्थल पर बड़ी संख्या में कर्मचारियों की तैनाती को देखते हुए श्रमिकों एवं रेलवे कर्मचारियों के लिए

भोजन, पेयजल, चिकित्सा सहायता और अन्य आवश्यक सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई है। इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल, सिग्नल एवं टेलीकम्युनिकेशन, ऑपरेटिंग, मैकेनिकल, कर्मशिराल तथा अन्य संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी रायगढ़ा DRM के नेतृत्व में प्रभावित स्थल पर मौजूद रहकर पुनर्स्थापना कार्य की लगातार निगरानी कर रहे हैं। मुख्यालय और मंडल स्तर पर स्थिति पर करीबी नजर रखी जा रही है। यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों की सर्वोच्च सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ पुनर्स्थापना कार्य में तेजी लाकर जल्द से जल्द रेल परिचालन सामान्य करने के लिए पूर्व तट रेलवे की ओर से हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

